## अभ्यास पत्रक

## पाठ – गीत-अगीत

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

**1. पद्यांश पढ़िए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए – (1x3=3 अंक)**

"गाता शुक जब किरण वसंती
छूती अंग पर्ण से छनकर।
किंतु, शुकी के गीत उमड़कर
रह जाते सनेह में सनकर।"

1. यहाँ 'शुक' और 'शुकी' किसे कहा गया है?

**उत्तर -** .....

2. 'वसंती किरण' से क्या तात्पर्य है?

**उत्तर -** .....

3. शुकी के गीत क्यों नहीं निकलते?

**उत्तर -** .....

**2. कथन और कारण पर आधारित प्रश्न (Assertion-Reason) – (2x1=2 अंक)**

4. **कथन:** प्रकृति में भी गीत-भावनाएँ विद्यमान होती हैं।
   **कारण:** कवि ने नदी, गुलाब, पक्षी और प्रेम में छिपे गीतों की कल्पना की है।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: सही

5. **कथन:** कवि मानता है कि केवल मनुष्य ही गीत गा सकता है।
   **कारण:** क्योंकि अन्य सभी सजीव प्रकृति मौन है।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: सही

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए – (5x1=5 अंक)**

6. कविता के अनुसार नदी किस भावना में बह रही है?

**उत्तर -** .....
.....

7. 'पाटल मूक खड़ा' पंक्ति का अर्थ क्या है?

**उत्तर -** .....
.....

8. 'गीत, अगीत, कौन सुंदर है?' – इस पंक्ति में कवि क्या पूछना चाहता है?

**उत्तर -** .....
.....

9. कविता में 'अगीत' का क्या तात्पर्य है?

eGyanArchive

**उत्तर -** .....

.....

10. कविता में 'फूल रहा अंतर' किसका संकेत है?

**उत्तर -** .....

.....

**4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)**

11. कवि ने गुलाब को मूक दर्शक क्यों कहा है?

**उत्तर -** .....

.....

.....

12. कविता में शुक और शुकी के प्रसंग द्वारा क्या संदेश दिया गया है?

**उत्तर -** .....

.....

.....

13. कवि ने प्रेमिका की मनोदशा को कैसे चित्रित किया है?

**उत्तर -** .....

.....

.....

**5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक)** *(उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)*

14. 'गीत-अगीत' कविता के माध्यम से कवि ने मनुष्य और प्रकृति की भावनात्मक अभिव्यक्ति की तुलना किस प्रकार की है?

**उत्तर -** .....

.....

.....

.....

.....

.....

**6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक)** *(उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)*

15. 'प्रकृति भी मौन रहकर गीत गाती है' – इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

**उत्तर -** .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

## उत्तर कुंजी

1. शुक – तोता, शुकी – मादा तोता।
2. वसंती किरण – वसंत ऋतु की मधुर धूप।
3. शुकी का गीत प्रेम में डूबा हुआ है, जो केवल अनुभूत होता है, सुनाई नहीं देता।
4. (क)
5. (घ)
6. विरह की वेदना में।
7. गुलाब मौन होकर भावनाओं को देख रहा है।
8. कवि पूछ रहा है कि क्या मनुष्य का गाया गीत सुंदर है या प्रकृति का मौन गीत।
9. वह गीत जो बोला न जाए पर भावना से प्रकट हो।
10. प्रेमिका के भीतर उमड़ती भावनाओं को।
11. कवि ने गुलाब को इसलिए मूक कहा क्योंकि वह बोल नहीं सकता, परंतु उसकी मौन भावनाएँ भी गीत की तरह हैं।
12. यह संदेश है कि प्रेम मौन होकर भी व्यक्त होता है, प्रेम को सुनाया नहीं, अनुभव किया जाता है।
13. प्रेमिका गीत सुनते हुए इतनी भावुक है कि वह सोचती है कि काश वह उस गीत की पंक्ति बन पाती।
14.

कविता 'गीत-अगीत' में कवि दिनकर ने मनुष्य द्वारा गाए गीतों और प्रकृति में मौन रूप से बहते भावों की तुलना की है। कवि नदी, गुलाब, पक्षी और प्रेमिका के माध्यम से यह प्रश्न उठाते हैं कि क्या केवल उच्चारित गीत ही सुंदर हैं या वे भाव जो बिना बोले प्रकट होते हैं, अधिक गहन होते हैं। नदी बहती है, तोता गाता है, प्रेमिका मौन रहती है – ये सभी प्रकृति की मौन गीतात्मकता को दर्शाते हैं। कवि इस विचार को सामने रखते हैं कि मनुष्य के गीत तो श्रव्य होते हैं लेकिन प्रकृति के अगीत हृदय को स्पर्श करते हैं। यह तुलना मानवीय और प्राकृतिक अभिव्यक्तियों को समान स्तर पर रखती है।

15.

प्रकृति स्वयं में एक गीत है। वह बिना बोले, बिना गाए, केवल अपने मौन और गति से भी हृदय को छूने की क्षमता रखती है। दिनकर की कविता 'गीत-अगीत' में नदी, गुलाब, पक्षी और प्रेमिका जैसे तत्व प्रकृति के मौन संगीत का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब नदी विरह में बहती है, तो उसमें गीत का भाव है। जब गुलाब अपनी सुगंध से वातावरण को भावुक करता है, तो वह एक मौन गीत है। जब एक तोता अपने प्रेम में डूबा गीत गाता है और मादा मौन होकर उसे सुनती है, वह भी प्रेम का गान है। यहाँ तक कि एक प्रेमिका जब प्रेमी का गीत सुनती है और खुद को उस गीत में पिरोना चाहती है, तो वह मौन रहकर भी एक 'अगीत' बन जाती है। यह स्पष्ट करता है कि गीत केवल ध्वनि नहीं, भावनाओं की तरंगें हैं। प्रकृति भी जब कुछ नहीं बोलती, तब भी वह अपने रंगों, गंधों, गति और सौंदर्य से ऐसा गान करती है जो आत्मा को छू जाता है। इस प्रकार प्रकृति का मौन, उसका अगीत, मनुष्य के गीतों से कहीं अधिक सुंदर और सजीव प्रतीत होता है।